By
Rahul Kumar Jha
Dept.of Political Science

Lecture-2

Topic - Features & Sources of Indian Political Thought

class - B.A. Degree - I (Hons. P-II)

Subject - Political Science

Date - 1 Dec.2020

By Rahul Kumar Jha.

भारतीय राजनीति-चिंतन के स्रोत & विशेषताएँ:-

आध्यात्मिकता की ओर झुकाव :- भारतीय राजनीति के संपूर्ण चिंतन एवं दर्शन में आत्मा और परमात्मा जैसे पराभौतिक विषयों में गहरी अभिरुचि का परिचय मिलता है। यहां ज्ञान को संपूर्ण सृष्टि का नियामक तत्व माना गया है, और उसे ईश्वर का साक्षात् स्वरूप कहा गया है। सृष्टि को स्थिर रखने के लिए यह जरूरी है कि उसका प्रत्येक तत्व अपने नियत स्थान पर स्थिर रहकर उपयुक्त नियमों का पालन करे।

चूंकि मानव-समाज सृष्टि की ही एक अभिव्यक्ति है, इसलिए यह जरूरी है कि प्रत्येक मनुष्य अपने निश्चित स्थान पर स्थिर रहकर अपने अपने कर्त्तव्यों का पालन करे।

भारतीय चिंतन के अनुसार, जड़ जगत तो प्रकृति के निर्विकार नियमों से संचालित होता है, परंतु मनुष्य इच्छा व विचार की क्षमता से संपन्न है। अतः मानव-समाज को संचालित करने वाले नियमों का ज्ञान प्राप्त करके ही वे अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन कर सकते हैं। इन नियमों का समुच्चय ही धर्म है जो सत्य और न्यायोचित का पर्याय है। दूसरी ओर, मनुष्य मोह-माया, लोभ या अहंकार के वशीभूत हो कर धर्म के मार्ग से विचलित हो सकते हैं। उन्हें सही रास्ते पर लाने और चलाने के लिए 'दंड' का प्रयोग आवश्यक हो जाता है।

राजतंत्र की प्रधानता :- वैसे तो प्राचीन भारत में राजतंत्र के अलावा गुटतंत्र और गणतंत्र भी विद्यमान थे, परंतु तत्कालीन राजनीति-चिंतन में राजतंत्र की प्रधानता देखने को मिलती है। गणतंत्र के अंतर्गत जन-सभाएं या प्रमुख नागरिकों की परिषदें, सार्वजनिक वाद-विवाद के विस्तृत नियम और चुनाव के तरीके प्रचलित थे।

परंतु गणतंत्र की भावना की इतनी सुन्दर अभिव्यक्ति के बावजूद इस दिशा में कोई व्यवस्थित चिंतन उभर कर सामने नहीं आया। दूसरी ओर, अधिकांश प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन राजतंत्र की समस्याओं के साथ जुड़ा है। इनमें राजा के कर्तव्यों, प्रशासन की कला, विभिन्न व्यवसायों के नियंत्रण, अपराध और दंड, न्यायदान के नियमों, कूटनीति के उपायों और राज्यशिल्प के मूलतत्वों पर विशेष ध्यान दिया गया है।

CHAPTER CONTINUES...